प्रस्तावना

रीहीट....(आफ्टरबर्नर्स ऑन)...रोलिंग (फॉर टेक ऑफ)...
एम.पी अनिलकुमार ने पंख पसारे और दूर, कहीं दूर गगन में अदृश्य हो गया। एक लंबे अरसे से जकडे हुए एम.पी के कदमों में आज दुनिया थी, जीवन से मुक्त, ऊंची उडान भरने को आजाद। आज वास्तव में आकाश ही उसकी सीमा थी। एक युग का अंत हुआ था, साथ ही यह एक नई शुरुआत भी थी।

एमपी...राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में मेरा सहपाठी, मेरा मित्र था... मई 20–2014 की अलसुबह दुनिया को अलविदा कह गया। इस ग्रह पर उसने कुल 50 साल और 15 दिन गुजारे, जिसमें से लगभग आधे व्हीलचेयर पर जकडे हुए। 1988 की एक सडक दुर्घटना ने उसके गरदन के नीचे के शरीर को लकवाग्रस्त कर दिया था। दुर्घटना के बाद से उसका जीवन अस्पताल, पुनर्वास संस्थाओं और व्हीलचेयर से बने दायरे में ही सिमटकर रह गया था।

इस हादसे ने भारतीय वायुसेना के फाइटर पायलट के रूप में उसके जीवन की पूरी दिशा बदलकर रख दी, किन्तु वह उस पर पूरी तरह हावी न हो सकी। इस दुर्दम्य जीवन का अंत आया, उस दुर्घटना के 26 साल बाद ब्लड कैंसर के चलते। इस गंभीर बीमारी का पता उसके पचासवें जन्मदिन के कुछ ही महीने

पहले हुआ था। 26 साल पहले भी डॉक्टरों ने उसके बचने की उम्मीद लगभग छोड दी थी, लेकिन उसने उन्हें झूठा साबित कर दिया था। इस बार फिर से, डॉक्टर हार मान चुके थे, कह रहे थे मौत से लडना अब व्यर्थ है। केवल चमत्कार ही अब उसे बचा सकता था और हम अब तक अजेय रहे उस जीव को तिल–तिल कर खत्म होते देखने को मजबूर थे।

एमपी का भारतीय वायुसेना में दाखिल होने का सपना केरल के एक छोटे–से गांव चिरयिन्किल में तब शुरु हुआ, जब उसने काझाकूटम के सैनिक स्कूल में दाखिला लेने का फैसला किया। सोलह वर्ष की आयु में स्कूली शिक्षा खत्म करने के बाद, एक कठिन चयन–परीक्षा पास करके वह खड़कवासला–पुणे की राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में पहुंचा। राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में शानदार प्रदर्शन करने के बाद एमपी वैमानिकी और उड़ान भरने में महारत हासिल करने के लिये वायुसेना अकादमी में दाखिल हुआ। यहां भी श्रेष्ठ प्रदर्शन के बाद उसे भारतीय वायुसेना में पायलट ऑफीसर (फाईटर शाखा में) के रूप में नियुक्त किया गया। 1985 तक वह भारतीय वायुसेना के लड़ाकू पायलटों में से एक था, पठानकोट में वह अपनी इस भूमिका का भरपूर लुत्फ उठा रहा था।

लेकिन, दो साल बाद एक खौफ़नाक सड़क दुर्घटना ने लड़ाकू पायलट के तौर पर उसके जीवन को खत्म करके रख दिया। हादसे के बाद भारतीय वायुसेना से उसे सेवानिवृत्त कर दिया गया और वह पहुंच गया पुणे–खड़की के पक्षाघातग्रस्त लोगों के लिये बनाए गए केन्द्र में, उसने अपना बाकी जीवन उसी केन्द्र में दूसरे लकवाग्रस्त लोगों के सानिध्य में बिताया। उसके कमरे के बाहर लगी तख्ती पर लिखा था–फ्लाइंग ऑफिसर अनिल कुमार एमपी, अवकाश प्राप्त और उस समय उसकी आयु थी महज चौबीस साल!

लेकिन एमपी कभी रिटायर नहीं हुआ। अपंगता के बावजूद भी वह कभी थका नहीं, उसके जीवन जीने के मंत्र उसे हमेशा सक्रिय बनाए रखा। उसका जीवन, धैर्य, दृढ़ निश्चय और प्रबल इच्छाशक्ति का पर्याय था। हममें से ज्यादातर लोग ऐसी कठिन परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते। उसकी जिजीविषा न सिर्फ उन सबके लिये मार्गदर्शक है, जो उसी स्थिति में अपने आप को पाते हैं, बल्कि हक़ीकत में तो सशक्त और अशक्त, हम सबके लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। इसीलिये उसकी जीवनगाथा कही–सुनी और पढ़ी जानी चाहिये। मैं मानता हूं कि वह भारत का स्टीफन हॉकिंग है।

इस पुस्तक में मैंने एमपी अनिलकुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व के इतिहास को समा लेने की कोशिश की है। उससे संबंधित ब्यौरों को इकट्ठा करना आसान नहीं था। यह मेरा सौभाग्य था कि एमपी के अपने खुद के बारे में लिखे हुए और तमाम दूसरे विषयों–खेलकूद से लेकर सियासत और सेना तक पर लिखे उसके लेख मुझे पढ़ने के लिये मिल गए। एमपी के अनेक मित्र, उसके स्कूल, राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी, भारतीय वायुसेना से संबंधित लोग उसके बारे में बताने के लिये आगे आए। मुझे बस उन कड़ियों को आपस में जोड़ना भर था। उन सबका नाम लेकर शुक्रिया अदा करना चाहूं तो अनजाने में कुछ नाम भूल सकता हूं, इसलिए उन सभी को मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने यह जीवनचरित्र लिखने में मेरी सहायता की। उनकी सहायता के बिना एमपी के जीवन को एक सूत्र में बांध पाना संभव नहीं होता और यह पुस्तक कभी नहीं लिखी जा सकती थी। मैं विशेष रूप से आभारी हूँ एमपी के परिवार का, जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को लिखने की अनुमति दी, साथ ही एमपी के प्रारम्भिक जीवन के बारे में जानकारी दी।

राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान मैं एमपी के इतने करीब नहीं था कि मुझे उसका मित्र कहा जाए। बाद में मैने हेलीकॉप्टर उड़ाना शुरु किया और उसने फाइटर प्लेन, लिहाजा हमारी दूरियाँ और बढ़ गईं। मेरा उससे संबंध तब गहरा हुआ, जब वह पुणे के अस्पताल में और बाद में पैराप्लेजिक होम में आया, जहां उसने अपनी ज़िंदगी के बाकी दिन गुज़ारे। मैं जब भी छुट्टियों में पुणे जाता तो उसके साथ कई घन्टे बिताता। धीरे–धीरे हमारी मित्रता गहरी होती गई और हम विभिन्न माध्यमों से एक दूसरे के सम्पर्क में रहने लगे, एक–दूसरे के जीवन में क्या चल रहा है? इससे वाकिफ होते रहे।

उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछने के लिये एक मित्र द्वारा लिखे गए एक मेल के जवाब में एमपी द्वारा लिखे गए ई–मेल की एक पंक्ति से उसके आत्मसंयम का अंदाजा लगाया जा सकता है, 'मेरा स्वास्थ्य? उसके बारे में जितना कम कहा जाए उतना अच्छा... असल में, तनहाई और मैं एक दूसरे से सियामीज ट्विन्स की तरह जुड़ गए हैं! कहते हैं ना कि जिसे हटाया न जा सके उसे सहन करना पड़ता है, वह भी अपना सिर ऊँचा रखकर'। उसकी इसी, कभी हार न मानने वाली, मनोवृत्ति ने उसे एक रचनात्मक जीवन जीने की राह दिखाई।

खुद को कैन्सर होने की ख़बर को भी उसने उसने बड़े धैर्य से लिया। उसे

पता था कि अब उसे अस्पताल में कीमोथेरेपी के लिये अधिक समय गुजारना पड़ेगा और वह तुरंत ही उसके लिए भी तैयार होने लगा। उसे यह भी पता था कि उसका अंत अब बहुत दूर नहीं था। वह अपने आस–पास के लोगों को अक्सर कहता कि अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है। हमेशा के लिये अदृश्य हो जाने से एक ही सप्ताह पहले उसने आईसीयू में लेटे–लेटे, अपने करीबी मित्र को अपना वसीयतनामा लिखवाया था। यह दस्तावेज एमपी की विशेष शैली में लिखा गया है, जिसमें हरेक छोटे से छोटे विवरण की ओर पूरा ध्यान दिया गया है। उसके दिमाग की धार अब भी तेज़ थी, कैंसर ने उसे भोथरा नहीं किया था। अपने अन्तिम दिनों में भी वह डॉक्टरों से ज़िद करता कि उसे अपने कम्प्यूटर पर काम करने की इजाज़त दी जाए, ताकि वो उसके मेलबॉक्स से छलक रहे ई–मेल्स का जवाब दे सके। वह अभी बहुत कुछ लिखना चाहता था, उसने सुझाव दिया कि उसे अपने कमरे में अपने कम्प्यूटर के साथ रहने दिया जाए और केवल कीमोथेरपी के समय ही अस्पताल लाया जाए। उसके बिस्तर के पास बैठकर उसके बालों में हाथ फेरते हुए मैं उसे बेहोशी में जाता, बाहर आता देखा करता। बीच–बीच में वह अपनी आंखें खोलता, अपने आस–पास खडे मित्रों को पहचानता। उसका हंसमुख और बुद्धिमान व्यक्तित्व उसकी बातों में फिर झलकने लगता। अजूबा था यह एमपी!

उसका पचासवां जन्मदिन, आईसीयू के उसके खास कोने में बड़ी शान से मनाया गया। उसने ही तय किया कि किसे आमंत्रित करना है और क्या करना है? इसकी भी स्पष्ट सूचनाएं हमें दीं। शायद यही अवसर था, जब वह आखिरी बार पूरी तरह से होश में था और उसकी बात ठीक भी थी। वह जानता था कि यह उसका इस धरती पर आखिरी जन्मदिन था। उसकी स्थिति जन्मदिन के बाद से और बिगड़ने लगी और जन्मदिन के सिर्फ दो सप्ताह बाद ही उसने अपनी आखिरी सांसे लीं।

आज वह मुक्त है, अपनी जकड़न से। आजाद है–ऊंची उड़ान भरने के लिये। एक तरह से हम खुश हैं। वह आज़ादी के लिये पैदा हुआ था। यह उसकी कठिनतम परीक्षा थी, जिसमें भी उसने अद्‌भुत सफलता पाई थी। जो भी उसे जानता था, वह उसे याद रखेगा और हमेशा उसकी प्रशंसा करेगा।

....हैप्पी लैंडिंग्स, एमपी!

आखिरी अवतरण

अंधेरा! कमरा मेरे चारों तरफ जैसे गरबा कर रहा है, गोल–गोल। घूमने दो। कितना कुछ करना अभी बाकी है। मेरा मेल बॉक्स छलक रहा है। कितने सारे दोस्त जानना चाहते हैं कि मैं कैसा हूं? क्या कर रहा हूं? मुझे उन्हें जवाब देना है। समय कितना कम है!

अंधेरा है और गर्मी भी, बहुत बहुत ज्यादा गर्मी। कमरे में आग लगी है या मेरा बदन सुलग रहा है? मैं परिचारक को बताता हूं "एसी को मिनिमम करो", फिर भी कोई राहत नहीं मिलती! लम्बे समय से किसी दर्द, किसी तरह की अस्वस्थता का अहसास नहीं हुआ है, तो फिर यह क्या है? मेरे अंदर सब जल रहा है। अरे, मुझे पानी दो। परिचारक एक पारदर्शी बोतल लाता है और एक ट्यूब मेरे मुंह से लगाता है। मैं घूंट लेने में भी असमर्थ हूं। सब कुछ जल रहा है, गोल–गोल चक्कर लगा रहा है।

पिछली बार ऐसा चक्कर मैंने तीस हजार फुट की ऊँचाई पर लगाया था, एक पत्ते की तरह मैं आकाश से नीचे गिर रहा था। "फुल ऑपोजिट रडर, स्टिक मूविंग सेन्ट्रली फॉरवर्ड" मेरे कानों में प्रशिक्षक

की आवाज़ गूंजी और मेरा लडाकू विमान फिर से मेरे नियंत्रण में था।

मैं अपने खूबसूरत MiG–21 में उड़ान भर रहा हूँ। यह विमान बिल्कुल बच्चे की तरह है और मैं उस बच्चे से बहुत प्यार करता हूँ। हमारे लिये आकाश ही सीमा है। वहाँ ऊपर किसी किस्म की बाधाएं नहीं होतीं। सिर्फ एक ही चीज होती है जिससे आप टकरा सकते हो–उड़ते हुए पंछी। उन्हें भी तो उड़ान भरना पसंद है। मैं फिर से उड़ान भरूँगा। अरे, कोई आओ और मेरी करवट बदल दो! मैं ज्यादा देर एक ही करवट पर नहीं लेट सकता!

क्या ये लड़ाकू विमान की आवाज़ है, जो मुझे सुनाई दे रही है? शायद ये SU–30 है। आज रात की उड़ान लगती है। उड़ान खत्म करने के बाद ये बंदे कहां मिलेंगे? बार में बैठकर गप्पे लगाएंगे? या किसी को ड्रिंक्स का बिल भरने के लिये पकड़ लेंगे? मुझे भी तो एक रात के अभियान पर जाना है! नहींनहीं, रुको! आज नहीं । आज मौसम ख़राब है। आज मैं यह थका देने वाला कागजी काम पूरा कर लेता हूँ। फिर सीधे घर जाऊँगा अरे यह क्या है? घुप्प, अंधेरा !

अम्मा कहाँ हैं? क्या उन्होनें मेरी मनपसंद मसालेदार तली हुई मछली बनाई है? उस बिल्ली को डाइटिंग की जरूरत है। शीजा! अच्चन की गोदी में मत बैठो, क्या नहीं जानती कि वो तुम्हारे पिताजी हैं? मेरी किताब कहां है? सोने से पहले, अभी तो मीलों दूर जाना है! रुको! इस अंधेरे के पार क्या मैं प्रकाश देख रहा हूं?

फ्लैशबैक

जून 27, 1988–उड़ान भरने के लिये मौसम अच्छा है। एमपी को एक मिग–21 विमान पठानकोट लाने के लिये, महाराष्ट्र में नासिक के पास ओझर भेजा गया। ओझर के हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड में मिग विमानों की मरम्मत करके उन्हें नया जीवन दिया जाता है। एक खूबसूरत चमकदार मशीन उड़ान भरने के लिये तैयार खड़ी थी, किन्तु पठानकोट ले जाने से पहले उसकी उड़ान क्षमता के लिये जांच होना जरूरी था।

अनुभवी पायलटों ने उसकी शुरूआती जांच कर ली थी और मशीन को उड़ान भरने के लिये योग्य घोषित कर दिया था। अब अनिल की बारी थी, उस विमान के उड़ने लायक होने की क्षमता को अच्छी तरह से जांचने की और कागजी कार्यवाही के बाद उसे अपने कब्जे में लेने की। वह अपने साथ तकनीशियनों की एक टीम लेकर गया था, जो उसे, कागजी कार्यवाही और प्रशासनिक औपचारिकताओं को पूरा करने में मदद कर रही थी।

इस काम को पूरा करने में बहुत ज्यादा विलम्ब हो गया था। विमान को ओझर से कब्जे में लेकर पठानकोट लेकर आने में, जहाँ मात्र एक सप्ताह लगना चाहिये था, उसमें अब तीन हफ्ते से ज्यादा का वक्त गुजर चुका था।

हवाईजहाज में कुछ छोटी–छोटी समस्याएं आ रही थीं। एमपी को उनके बारे में, चीफ़ टेस्ट पायलट, प्रसिद्ध अंतरिक्ष–यात्री, विंग कमांडर राकेश शर्मा से चर्चा करने का मौका मिल गया। एमपी ने विमानों और उनकी प्रणाली के विषय में अपने ज्ञान से टेस्ट पायलट को प्रभावित कर दिया। समस्याओं को सुलझा लिया गया और विमान को उड़ान भरने के लिये योग्य घोषित कर दिया गया। पर मौसम के देवता को जैसे एमपी का ओझर छोडकर जाना रास नहीं आ रहा था और उसने उसे कुछ और समय के लिये रोक लिया।

अंत में मौसम के साथ ही सब कुछ साफ हो जाने पर, एमपी ने मिग के कॉकपिट में, खुद को बेल्ट बांधकर सुरक्षित किया, लम्बी यात्रा के लिये तैयार नक्शे को सामने रखा और उड़ान के लिये तैयार हो गया। अपने स्क्वॉयड्रन में वापसी को लेकर वह बहुत खुश था। पिछले कुछ हफ्तों में उसने अपने दोस्तों और अपनी दैनिक उड़ानों की कमी को बहुत शिद्दत से महसूस किया था।

विमान को उड़ानमार्ग पर ले जाते हुए और नीचे उसे विदा देने के लिये खड़े तकनीशियनों की सलामी का चुस्ती से जवाब देते हुए वह सोच रहा था कि, इस सबके बावजूद ओझर में बिताया समय उसके लिये एक अच्छा और दिनचर्या को बदलने वाला अनुभव रहा था। इस दौरान उसने कुछ अच्छी फिल्में देखी थीं, शिरड़ी के मंदिर में दर्शन के लिये हो आया था और ओझर में पोस्टेड अपने कुछ मित्रों से भी मुलाकात हो गई थी। इसके अलावा वहां उसे विमान के बारे में कितनी जानकारी मिली थी! सब कुछ कई बार जांच लेने के बाद, एमपी ने, ओझर से 1365 किलोमीटर दूर स्थित पठानकोट के लिये, उड़ान भरी। वह नहीं जानता था कि यह उसकी आखिरी उड़ानों में से एक साबित होने वाली थी!

लैंडिंग के वक़्त नीचे कंक्रीट के रनवे पर टायरों के घर्षण से निकलती चीख, एमपी के लिए जैसे संगीत था। घटनाहीन उड़ान के बाद पठानकोट में यह परफेक्ट टच डाउन था। एमपी ने विमान को अपने स्क्वॉयड्रन के डिसपार्सल वाली जगह पर ले जाते हुए चारों तरफ नज़रें दौड़ाई–'इन पिछले हफ्तों की मेरी गैरमौजूदगी में क्या बदला है?' वह अपने मित्रों और सहकर्मियों से मिलने को बहुत उत्सुक था। ओझर के बारे में बताने के लिये उसके पास कितना कुछ था!

'अभियान को सफलता से पूरा कर लिया गया। एक नए विमान को स्क्वॉड्रन

में शामिल कर लिया गया', एमपी इंजिन को शांत करते हुए सोच रहा था। उसने कॉकपिट से नीचे उत्साह से छलांग लगाई और मिग की सतह को अपने दस्ताने ढके हाथों से बड़े प्यार से सहलाया, जैसे एक कठिन सफर के बाद कोई घुड़सवार अपने घोड़े को सहलाता है। आखिर इस मशीन ने, उड़ान के दौरान, किसी अच्छे बच्चे की तरह व्यवहार किया था, शाबाशी देना तो बनता था! एमपी ने विमान के चारों ओर घूमकर उड़ान के बाद की जांच की। हेल्मेट को बगल में दबाया, ऑक्सीजन मास्क को कंधे पर डाला, और क्रू रूम की तरफ चल पड़ा, जहां उसके सहकर्मियों ने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया।

वह शाम उसने अपने कमरे को व्यवस्थित करने में बिताई। छब्बीस दिनों की उसकी अनुपस्थिति में कमरे में धूल जम गई थी। फिर स्क्वॉश कोर्ट जाकर वह कुछ देर खेला और फिर सोने के लिये चला गया। काफी दिनों के बाद उसे खेलने का मौका मिला था। कल फिर एक व्यस्त दिन होने वाला था। सुबह उसे दो मिशन करने थे, जबकि एक रात को। बिस्तर पर आंखें बंद करते हुए, उसने स्वयं को, दूसरे दिन की उड़ान के लिये, मानसिक रूप से तैयार किया।

जून 28, 1988– उस अभागी दुर्घटना का दिन! 11 अक्टूबर 1994 के इंडियन एक्सप्रेस में एमपी ने लिखा, "ओझर में एचएएल में मेरी 26 दिन की अस्थाई ड्यूटी के दौरान मेरे दूसरे कामों का बकाया जमा हो गया था जिसे मैने जल्द से जल्द पूरा करने का मन बना लिया था। सुबह मैंने मेरे कमांडिंग अफसर, विंग कमान्डर आरके घोष और स्क्वॉड्रन लीडर एके जैन के साथ विंगमैन के तौर पर दो उड़ानें भरीं। फिर किसी न थकने वाली मशीन की तरह, मैं अपने लॉगबुक और ब्लूबुक की रिपोर्ट्स को पूरा करने में लग गया। ये कागजी काम बहुत ही ऊबाऊ काम है, लेकिन ये फाइटर फ्लाइंग का एक अभिन्न अंग भी है।

सुबह की दो उड़ानों के अतिरिक्त भी पूरा दिन व्यस्तता भरा था। बहुत गर्मी और उमस थी। सभी ऑफीसर्स को अपने एक साथी के तबादले पर उसे स्टेशन विदा देने जाना था। उसके बाद स्क्वॉड्रन को दोपहर की ड्यूटी से छुट्टी दे दी गई। शाम को सभी फिर से रात की उड़ान की ब्रीफिंग के लिये इकट्ठा हुए। मौसम का पूर्वानुमान गर्जना के साथ भारी बरसात की आशंका बता रहा था।

ब्रीफिंग के बाद सभी मौसम के साफ होने की प्रतीक्षा में क्रू रूम में आ बैठे और हमेशा की तरह हंसी मजाक का सिलसिला शुरू हो गया। चाय, कॉफी

और नींबू–पानी के साथ सब मौसम विभाग की तरफ से मौसम के, उड़ान भरने लायक साफ होने के संकेत मिलने की प्रतीक्षा करने लगे। तभी टेलीफोन की तीखी घंटी ने एमपी को चौंका दिया, उसने रिसीवर उठाया।

दूसरे सिरे पर मौसम विभाग के ऑफीसर थे। उन्होंने सूचित किया कि बिजली की गर्जना के साथ तेज बारिश की चेतावनी को रात दस बजे तक के लिये बढ़ा दिया गया है। एमपी ने यह संदेश तुरंत फ्लाइट कमांडर, स्क्वॉड्रन लीडर पीआई मुरलीधरन को पहुंचाया, जो कि कागजी औपचारिकताओं को निपटाने में व्यस्त थे। शीघ्र ही निर्णय लिया गया कि अब और देर तक मौसम के साफ होने की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है। रात की उड़ान को रद्द कर दिया गया।

अब सभी जवान पायलटों के पास कुछ समय था, क्योंकि अगले दिन की ब्रीफिंग देर से होने वाली थी। नवविवाहित फ्लाइट लेफ्टीनेंट संजीव यादव ने सभी को ड्रिंक्स और डिनर के लिये अपने घर आमंत्रित किया। निमंत्रण से खुश सभी नौजवान यादव के घर जाने से पहले, अपने–अपने कमरों की तरफ जल्दी से वर्दी उतार कर कपड़े बदलने लिये दौड़ पड़े।

'आप लोग आगे चलो, मैं थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा', एमपी ने उनसे कहा, 'मेरा बहुत सा काम बाकी है, डिनर तक मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा'। क्रू रूम की नीरव शांति में वह अपने काम में जुट गया। मासिक रिपोर्ट्स लिखने की जिम्मेदारी उसकी थी और उसकी लम्बी गैरहाजिरी के कारण रिपोर्ट लिखना बाकी रह गया था। उसने सोचा यह बाकी काम निपटाने के लिए अच्छा मौका था।

इंडियन एक्सप्रेस के उसी लेख में एमपी लिखता है, 'काम के बोझ के बावजूद मैं स्वयं को विचारमग्न स्थिति में पाता हूँ, मैं इस प्रश्न पर विचार कर रहा हूँ कि–एक अच्छा लड़ाकू पायलट बनने के लिये किन तीन गुणों की सबसे ज्यादा जरूरत है? मेरे दिमाग में जवाबों की जैसे बाढ़ आ गई। एक जवाब मिलता है–एक अच्छा लड़ाकू पायलट बनने के लिये जरूरी तीन गुण हैं–अप्रतिम दक्षता, अचूक निर्णय क्षमता और अडिग समर्पण–इसी क्रम में और बहुतायत में'।

वह आगे लिखता है, 'शायद यह कहा जाए कि ये तीन गुण तो हरेक व्यवसाय के लिये अनिवार्य शर्तें हैं। बिल्कुल सही, किन्तु अन्य किसी भी व्यवसाय में इनकी उतनी मात्रा में ज़रूरत नहीं होती जितनी कि एक लड़ाकू विमान उड़ाने में होती है। इसीलिये फाइटर पायलट अलग ही मिट्टी के बने

होते हैं और इसीलिये उनके आस–पास अजेयता की आभा होती है। यही कारण है कि यह पेशा इतना कठिन और अक्षमाशील होता है। हां, निश्चित रूप से अक्षमाशील। ख़तरे हर जगह मंडराते हैं, यहां तक कि ज़मीन पर भी', वह वक्तव्य का अंत करता है।

उस रात की शांति को भंग किया बिजली कड़कने की आवाज़ ने। मौसम विभाग का पूर्वानुमान सच निकला, उसने सोचा। एस्बेस्टॉस की छत पर बारिश की आवाज सुनाई दे रही थी। उसने अपने आप को थोड़ा और काम निपटाने के लिये उकसाया। पानी की बरसात अब ओलों की बरसात में बदल गई थी, बादल और बिजली अपने उग्र रूप में कड़क–गरज रहे थे, तभी बिजली चली गई पूरा बेस अंधकार में डूब गया।

अब और इन्तजार करने का कोई मतलब नहीं था। लाइन के दोबारा शुरू होने में देर लगना स्वाभाविक था। अपनी फ्लाइंग किट की एक अनिवार्य वस्तु –टॉर्च–को जलाकर एमपी ने अपना ब्रीफकेस ढूंढा, हीरो–हॉन्डा बाइक की चाबी उठाई, ऑफिस के ठीक से बंद होने की जाँच की और पार्किंग की तरफ बढ़ गया।

'मैंने अपनी बाइक को किक स्टार्ट किया और ऑफिसर्स मेस की तरफ चल दिया। जल्दी ही मैं स्क्वॉड्रन क्षेत्र के बाहर घुप्प अंधेरे में था। तूफान की उग्रता कुछ कम तो हुई थी, किन्तु उसकी भयानक रहस्यमयता अब भी बनी हुई थी। उस तूफान में छिपी दुश्मन जैसी उग्रता को मैं पहचान पा रहा था। बादल के गरजने की आवाज कई बमों के तीस सेकेंड के अंतर पर होने वाले विस्फोट के धमाके से कम नहीं होती', उसने लिखा है।

'बहुत संभलकर मैं पानी के बीच से रास्ता बनाता हुआ चल रहा हूँ। तकनीकि क्षेत्र का गेट खुला हुआ है। तेज हवा के कारण मेरे चेहरे पर बारिश के थपेड़े लग रहे हैं और मेरी–नज़र को धुंधला कर रहे हैं। मोटरसाईकल की रोशनी में देखने के लिये मुझे आँखों पर जोर डालना पड़ रहा है'।

जैसे वह गेट के पास पहुंचा अचानक ही उसकी नज़र सड़क के आर–पार आड़े रखे एक बैरियर पर पड़ी। 'ये तो यहां नहीं था, जब मैं ओझर के लिये निकला था' उसके दिमाग में कौंधा। किन्तु बहुत देर हो चुकी थी। वह डंडा अब केवल दस मीटर की दूरी पर था। टकराने से बचने का एक ही उपाय नजर आया–झुक कर डंडे के नीचे से निकल लिया जाए। उसने वही किया।

बैरियर पर तैनात गार्ड उस नजारे को देख रहा था। वह समझ गया कि मोटरसाईकल सवार ने बैरियर को नहीं देखा है। वह जल्दी से बैरियर को खोलने के लिये दौड़ा। गार्ड अंग्रेजी के यू अक्षर के आकार में बने हुक से बार को निकालने का प्रयास करने लगा। जैसे ही बैरियर हुक से निकल कर नीचे गिरा उसी समय एमपी झुकता हुआ वहां से निकल रहा था। ग़लत समयानुपात!

धम्म अंधेरा

मोटरसाइकल बाँई तरफ घिसटती चली गई और एमपी उस पर से उछलकर गिरा, बैरियर ने उसकी गरदन पर हिट किया था। हेल्मेट उसकी गरदन में धंस गया था। हेल्मेट ने उसकी रीढ़ की हड्डी को नुकसान पहुँचाया और उसकी तीन कशेरुकाओं को तोड़कर रख दिया। वह घायल अवस्था में ज़मीन पर पड़ा था और गार्ड घबराया हुआ, मदद की तलाश कर रहा था। कहीं कोई खून बहता नहीं दिखाई दे रहा था, इसलिये गार्ड को लगा कि शायद चोट गंभीर नहीं होगी।

कुछ समय बाद एक कार जिसे गराज में पार्क किया जाना था, वहां आती दिखाई दी, गार्ड ने उसे हाथ हिलाकर रोका और एमपी को अस्पताल पहुंचाने के लिये मदद की प्रार्थना की। ड्राइवर ने तुरंत कार को मोड़ा और दोनों ने बेहोश एमपी को उठाकर कार में डाला।

यहां दूसरी दुर्घटना हुई। 'जब उन दोनों ने मुझे उठाया तो उन्होंने मुझे हाथ और पैरों से पकड़कर उठाया। इसकी वजह से मेरा सिर बिना सहारे के लटकता रह गया, हेल्मेट के टुकड़े और भी अंदर धँस गए और मेरी रीढ़ की हड्डी को गंभीर नुकसान पहुंचा', एमपी ने लिखा है।

उसे दुर्घटना स्थल से थोड़ी ही दूरी पर स्थित, स्टेशन सिक क्वार्टर्स में ले जाया गया। एमपी को होश आया, वह गरदन में लगी गंभीर चोट के दर्द से चीख रहा था। तुरंत डॉक्टरों को बुलाया गया, बमुश्किल उसके हेल्मेट को उसके सिर और गरदन से निकाला गया। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखना था कि उसकी रीढ़ की हड्डी को और भी नुकसान न हो। एमपी याद करता है, 'असह्य दर्द के बावजूद मैंने उठने की कोशिश की और तभी मुझे खयाल आया कि मुझे लकवा हो गया था। मैं गहरे सदमे में था, उसी वक्त मुझे समझ आ गया कि लकवे का कारण मेरे सिर में लगी चोट है'।

स्टेशन सिक क्वार्टर्स के प्राथमिक उपचार केन्द्र में डॉक्टर ज्यादा कुछ नहीं कर सकते थे। दर्द निवारक इन्जेक्शन दिये जाने के बाद उसे हवाई अड्डे के

पास ही स्थित मिलिट्री अस्पताल में ले जाने का निर्णय लिया गया। यहाँ पर भी उसके जटिल घाव का इलाज करने के लिये कोई विशेषज्ञ उपलब्ध नहीं था, लिहाजा उसे तुरंत ही दिल्ली के सेना अस्पताल ले जाने का फैसला हुआ। वायुसेना ने बिना देरी किये उसे अगली सुबह हवाई मार्ग से दिल्ली ले जाने के लिये व्यवस्था कर दी।

उसके फ्लाइट कमांडर 'मुरली' लिखते हैं, 'मैं दुर्घटनास्थल की ओर दौड़ा और फिर पठानकोट के सेना अस्पताल पहुंचा', उस गेट पर तैनात गार्ड से बात करने पर उन्हें खयाल आया कि पास वाला गेट खुला रखकर एक बैरियर को बंद रखना ग़लत था। वे आगे लिखते हैं, "उस रात के दौरान हमें पता चला कि अनिल की C4/C5 कशेरुकाएं टूट गई हैं। उसे साँस लेने में समस्या हो रही थी, क्योंकि उसका डॉयफ्राम काम नहीं कर रहा था। मैंने अपने दिल्ली स्थित, भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियुक्त भाई सुवर्थन को अनिल का मामला अपने हाथ में लेने और उसकी स्थिति के बारे में ताज़ा जानकारी हमें देते रहने की प्रार्थना की। अनिल को तेज बुखार था और स्थिति गंभीर थी'।

एमपी को अगली सुबह ले जाया जाना था, अतः स्क्वॉड्रन के एक नौजवान अफसर को एमपी के कमरे से उसके लिये कुछ कपड़ों और प्रसाधन सामग्री लाने के लिये भेजा गया। उन दिनों रीढ़ की हड्डी में चोट लगे घायल को सुरक्षित रूप से ले जाने के लिये इस्तेमाल होने वाला विशेष 'स्कूप स्ट्रेचर' सेना अस्पताल में उपलब्ध नहीं था। घायल को केवल एक सख्त तख्ते पर बांध दिया जाता और गरदन के आसपास सहारा देने के लिये रेत से भरी छोटी–छोटी थैलियां रख दी जातीं, इससे काम चल जाता था। लेकिन, एमपी का मामला बहुत गंभीर था। इसलिये तय हुआ कि स्कूप स्ट्रेचर की व्यवस्था की जाए।

स्थानीय तौर पर स्कूप स्ट्रेचर की व्यवस्था करना संभव न हो सका। वहां से 70 किमी दूर ऊधमपुर के कमांड अस्पताल में स्कूप स्ट्रेचर उपलब्ध था। फ्लाइट लेफ्टीनेंट रनबीर (बीरा) और केआर अजित (जीता) अपनी मोटरसाइकल से ऊधमपुर जाकर स्ट्रेचर लाने के लिये तैयार हो गए। रात भर की यात्रा तय करके, स्ट्रेचर के साथ मोटरसाइकल पर बमुश्किल संतुलन बनाते हुए वो अगली सुबह पठानकोट पहुँचे। इस स्ट्रेचर पर एमपी को लिटाकर दिल्ली के अस्पताल ले जाया गया।

दिल्ली में धौला कुँआ स्थित रिसर्च एंड रिफरल आर्मी हॉस्पिटल में रीढ़

की हड्डी के इलाज के विशेषज्ञ डॉक्टर और परिचारकों का एक दल आने वाले घायल के इलाज की जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार खड़ा था। एमपी को अविलम्ब स्थिर किया गया और फिर उस समय उपलब्ध सर्वोत्तम विशेषज्ञों की टीम उसकी रीढ़ की हड्डी के जटिल ऑपरेशन के लिए लिये भीतर ले गई। जून 27–चिरयिन्कील। एमपी की माता 'अम्मा' की तबियत अचानक खराब हो गई और उन्हें उलटियाँ होनीं शुरु हो गईं। शीजा, उसकी बहन लिखती है, 'उस दिन पक्षी भी बेसुरे गाते लग रहे थे और उस उदासी भरे माहौल ने हम सबको बीमार–सा कर दिया था'।

29 तारीख की सुबह तक एमपी के पिताजी को दुर्घटना की खबर मिल गई थी। स्पष्ट रूप से विचलित होने के बाद भी उन्होनें इस बारे में परिवार में किसी से कुछ नहीं कहा। शीबा–बड़ी बेटी को उन्होंने क्लास में जाने से रोक दिया और घर के गेट के बाहर चहल–कदमी करने लगे। कुछ देर बाद छोटी बेटी 'शीजा' ने देखा कि उनके घर के बाहर एक छोटी–सी भीड़ इकट्ठा हो रही थी पास के ही गाँव से उसके मामाजी, उसके पिताजी के कुछ पुराने मित्र वहाँ इकट्ठे हो गए थे। उसने सोचा कि वो सब हमेशा की तरह किसी राजनैतिक विषय पर चर्चा करने के लिये आए होंगे।

दोपहर होने तक अम्मा और दूसरे बच्चे चिंतित होने लगे। कुछ तो ग़लत हो रहा था। वातावरण में अत्यधिक तनाव था। आखिर में 'अच्चन' भीड़ से अलग होकर अंदर आए। दरवाजे पर खड़े होकर उन्होंने वो बुरी ख़बर दी, 'कुन्जुमोन का एक्सीडेंट हुआ है'। अम्मा चीखकर बेहोश हो गईं, उनके जीवन से रोशनी प्रकाश की एक किरण लुप्त हो गई थी।

ऑपरेशन छह घंटों तक चला। उसकी गरदन के पिछले हिस्से और रीढ़ की हड्डी को खोला गया, ऐसा करते वक्त डॉक्टरों को यह भी ध्यान रखना था कि उसके ज्ञानतंतुओं को और अधिक नुकसान न पहुंचे। उसके ऊतकों में टूटकर घुस गए हड्डी के छोटे–छोटे टुकडों को बेहद सावधानी से एक–एक कर के निकाला गया, ऑपरेशन के बाद उसकी गरदन को फिर से सिल दिया गया और उसे स्वास्थ्यलाभ के लिए सघन चिकित्सा कक्ष में ले जाया गया।

असह्य दर्द के बीच जब एमपी को होश आया तो उसने आस–पास यह देखने के लिए नज़र दौड़ाई कि क्या उसका कोई करीबी यहां है जिससे वह बात कर सके? उसे घेर कर खड़े, उसके मित्र, डॉक्टर और नर्सों की नज़रों में भरे

भाव को देखकर वह तुरंत ही समझ गया कि उसकी स्थिति निराशाजनक थी।

एमपी होश और बेहोशी के बीच गोते खा रहा था, इसी दौरान जब वह कुछ होश में था तो उसने अपने पास, अपने एक सहपाठी और एक मित्र को बैठा पाया। अपनी सारी ताकत जुटाकर वह फुसफुसाया कि उसने अब और अधिक नहीं जीने का निर्णय लिया है क्या वे लोग इस काम में उसकी मदद कर सकेंगे? 'प्लीज, मुझे ऐसा ज़हर ला दो जो मुझे तुरंत खत्म कर दे', वह गिड़गिड़ाया। वो लोग उससे आँख नहीं मिला पा रहे थे। क्या जवाब दें, किसी को समझ नहीं आ रहा था? उसका स्कूल का और राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी का सहपाठी उसके बिल्कुल पास बैठा था, साहस बटोर कर वह बोला, 'हिम्मत रखो, हम पाँच सालों तक प्रतीक्षा करेंगे और तुम्हारी प्रगति को देखेंगे। अगर उस समय भी तुम्हें मर जाने की इच्छा हो तो, हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं'? एमपी फिर से कोमा में चला गया।

ठीक पाँच साल बाद उसी तारीख को एमपी ने अपने मित्र को एक ई–मेल भेजा, कहा कि पाँच साल पहले आईसीयू में किए गए अनुबंध को रद्द समझा जाए।

तब तक उसे जीने का मकसद मिल चुका था।

ऑपरेशन के बाद दिल्ली के अस्पताल में ज्यादा कुछ करने जैसा नहीं बचा था। डॉक्टर केवल उसकी प्रगति को देख सकते थे, इसलिए एमपी को आगे के इलाज और बेहतर देखभाल के लिए खड़की के सैनिक अस्पताल में ले जाने का फैसला लिया गया।

4 अक्टूबर 1994 के इंडियन एक्सप्रेस के लेख में एमपी ने लिखा है, 'जब मुझे होश आया तो मैंने खुद को चौतरफा लकवा ग्रस्त दुनिया में जकड़ा पाया। अब मैं आजीवन कैदी बन गया हूँ, गरदन के नीचे के भाग में लकवा लग गया था, मेरे शरीर पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं रह गया था, मैं अपने हाथ–पाँव नहीं हिला सकता था, अपनी भोजन की जरूरत को पूरा करने के लिये भी मैं दूसरों पर निर्भर हो गया था। विरोधाभासी बात यह थी कि इस लकवे का सबसे ज्यादा यातनामय भाग था शरीर का पीड़ारहित होना। चाहे–अनचाहे मैं इस वृहत जगत के अंदर उस सूक्ष्म जगत का भाग बन गया था जो डार्विन के 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट'–जो शक्तिशाली होगा वही जीवित रहेगा–के सिद्धांतानुसार ही चलती है। उस भयानक क्रूर रात के बाद से मैं एक ज़िंदा

वनस्पति भर बनकर रह गया था।

सन 2014। दुर्घटना के छब्बीस साल बाद एमपी को एक और प्राणघातक रोग हो गया—अस्थिमज्जा से संबंधित ब्लड कैंसर, जो कि ब्लड कैंसर का सबसे ख़तरनाक रूप होता है। डॉक्टरों ने इसके लिए कीमोथेरेपी के हार्ड डोज़ लेने से मना किया था, इसके बावजूद इस रोग को मात देने के लिए एमपी ने कीमोथेरपी को ही चुना। लगभग इसी समय, सौभाग्य से, बीएस कृष्ण कुमार उर्फ केके को एनडीए में प्रशिक्षण प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया। वह एमपी का स्कूल, कक्षा और बाद में एनडीए में भी सहपाठी रह चुका था। एनडीए में वह उसी स्क्वॉड्रन में था जिसमें एमपी था। अत्यंत व्यस्त दिनचर्या होने के बावजूद केके, कई महीनों तक अस्पताल और अकादमी के बीच दौड़ता रहा, एमपी के साथ अधिक से अधिक समय बिताता और उसके इलाज में मदद करता। केके उसकी सभी प्रशासकीय औपचारिकताओं को निबटाता रहा।

अकादमी में अपना दिनभर का काम खत्म करने के बाद केके, एमपी के लिए घर का खाना डिब्बे में भर कर सत्रह किलोमीटर दूर अस्पताल पहुंच जाता। तेज़ दवाओं के असर के कारण एमपी, कई बार उनींदा होता था, जब भी उसे होश आता वह केके को अपने पास बैठा पाता। एमपी उससे अपने जीवन के अनेक पहलुओं पर चर्चा किया करता—प्रसिद्ध अभिनेता प्रेम नजीर से लेकर, स्कूल और एनडीए में की गई शैतानियों, गाँव में बिताए गए जीवन, मित्रों के अनुभव तक वह सब कुछ याद करता, मानों वह समय के चक्र को उल्टा घुमा रहा हो। अपना बीता हुआ कल फिर से जी रहा हो! बोलते—बोलते थक कर वह सो जाता और कुछ ही मिनटों के बाद फिर से जागकर, वह बोलना शुरु कर देता जैसे बीच में रुका ही न हो। बातचीत के इन्हीं सत्रों में से एक के दौरान एमपी ने अपनी वसीयत लिखने की इच्छा प्रकट की थी।

वसीयत का मसौदा एमपी ने बोलकर सुनाया था लेकिन उसकी कानूनी अभिव्यक्ति लिखित में होना भी जरूरी था। उसके स्कूल और एनडीए के सहपाठी थॉमस कुट्टी जोसेफ़ को बुलाया गया। जोसेफ़ सेना से सेवानिवृत्त होकर हाल ही में दिल्ली के सर्वोच्च न्यायालय में वक़ालत कर रहा था। उसने एमपी की वसीयत की एक रूपरेखा तैयार की और एमपी को पढ़कर सुनाई। एमपी ने उसमें कुछ पंक्तियाँ यहाँ—वहाँ जोड़ने के लिए और रूपरेखा को टाईप करके दूसरे दिन लाने के लिए कहा। केके को याद है कि एमपी फिर भी संतुष्ट नहीं

हुआ और उसने कुछ दूसरे परिवर्तन भी करवाए। इस तरह अगले कुछ दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा।

हालाँकि कीमोथेरपी उसके शरीर को और अधिक खोखला किए जा रही थी, लेकिन उसका दिमाग अब भी पहले जैसा ही सतर्क था। उसे वसीयत की भाषा में किए गए प्रत्येक परिवर्तन अच्छी तरह से याद थे और उसने यह सुनिश्चित किया कि उसके द्वारा बताया गया हरेक अल्पविराम और पूर्णविराम उसकी चाही जगह पर ही हो।

ओह! आसन्न–मृत्यु होने पर भी वह संपूर्णता का इतना आग्रही था! रूपरेखा को स्टॉम्प पेपर पर टाईप करवाया गया और तीन गवाहों–एमपी का भाई एमपी जयकुमार, एयर कमोडोर कृष्ण कुमार और कर्नल आरके मुखर्जी ने उस पर हस्ताक्षर किए। एमपी के अंगूठे की निशानी को दस्तावेज पर चस्पा किया गया। दस्तावेज की औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद, एमपी के बिस्तर के आसपास खड़े इन तीनों लोगों का एक फोटो भी लिया गया।

वसीयतनामा बहुत ही खूबसूरती से और विचारपूर्वक लिखा गया है। इसमें एमपी की अद्वितीय शैली में उसके जीवन का सार ही देखा जा सकता है। यह दस्तावेज उसके व्यक्तित्व, उसकी परवरिश, उसकी दयालुता और उसके जीवन से प्यार को प्रतिबिंबित करता है। जब मैंने इसे, एमपी की मृत्यु के कुछ दिन बाद, पहली बार पढ़ा तो मेरी आँखें भर आईं।

अपनी विकलाँगता के बावजूद एमपी अपनी वसीयत में लिखता है कि उसने एक पुत्र और भाई के नाते अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाया है और अपने परिवार की आर्थिक जरूरतों को, अपने जीवनकाल में और उसके बाद भी, पूरा किया है।

वह लिखता है, 'गरदन के नीचे संपूर्ण विकलाँगता की अवस्था में एक चौथाई शतक बिताने के बाद, मुझे पराधीन होने का मतलब, साधारण व्यक्ति से कुछ ज्यादा ही शिद्दत से समझ में आया है। क्योंकि मेरे जैसे, अपनी मूल जरूरतों के लिये भी दूसरों की सहायता पर संपूर्ण रूप से आश्रित व्यक्ति से ज्यादा इसे कौन समझ सकता है?' अपने परिचारकों के लिए प्रेम और कृतज्ञता के प्रतीक रूप में, उसने उन सबके लिए अपनी वसीयत के द्वारा कुछ–न–कुछ राशि सुरक्षित की और अपनी बाकी की संपत्ति को अपनी माता, बहन–भाईयों और मित्रों में बांट दिया।

अपनी इस कठिन बीमारी के हृदयस्पर्शी चिन्ह के रूप में उसने अपनी सभी व्यक्तिगत इस्तेमाल की वस्तुएं–'कझाक 81' चिन्ह वाली एम्बुलेन्स, जो उसके स्कूल के सहपाठियों ने मिलकर उसे भेंट दी थी, उसका एयर कंडीशनर और टीवी–उस विकलाँग संस्था को दे दिया गया जो बीस साल से भी अधिक समय तक उसका घर रहा था। 'मैं चाहता हूँ कि मेरे पर्सनल कंप्यूटर का कोई इस्तेमाल न करे, और उसे मेरे कुछ अन्य स्मृतिचिन्हों, तस्वीरों और दो तमगों–'एनडीए का बेस्ट एयर फोर्स कैडेट और एएफए का बेस्ट एयरोबॉटिक्स', जिन्हें मैंने बहुत संजोकर रखा है–के साथ मेरे पुराने स्कूल के एक कोने में सादगी से रख दिया जाए, ताकि मेरे जीवन के सार–'विकलाँगता आपको पराजित कर दे, यह जरूरी नहीं है'–को विद्यार्थी अधिक अच्छी तरह से समझ सकें'।

'अन्त में, मैं एक और बात का विशेष उल्लेख करना चाहूँगा। मेरी विकलांगता के कारण मेरे जीवन के सीमित हो जाने के बावजूद, मेरा जीवन बौद्धिक रूप से उत्साहवर्धक और संतोषजनक रहा है, जिसका पूरा श्रेय मेरे सहपाठियों, मेरे बैचमेट्स, मेरे परिवार के सदस्यों और अन्य मित्रों को जाता है, जिन सबका नाम से उल्लेख कर पाना मेरे लिए कठिन है। उन सबको मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ'।

कझाकूटम के सैनिक स्कूल के एक कोने में, जहाँ एमपी के स्मृतिचिन्हों को उसकी इच्छा के अनुसार सहेज कर रखा गया है वहाँ, एमपी मानों आज भी जीवित है। कमरे के बाँयें कोने में उसकी व्हीलचेयर के पीछे एक बड़ा सा पोस्टर टँगा है, जिस पर एमपी के शब्द लिखे गए हैं–'समस्या जितनी मुश्किलविजय उतनी ही मधुर'। उसके तमगे और स्मृतिपट फ्रेम करके दीवार पर टाँगे गए हैं। साथ ही उसका प्रसिद्ध लेख 'एयरबोर्न टु चेयरबोर्न', उसके अन्य लेख और पुस्तकें भी प्रदर्शित की गई हैं। दाँई तरफ उसका कम्प्यूटर, की–बोर्ड, मुख से लिखने के साधन आदि रखे गए हैं, जो उसके जीवन के उत्तरार्ध में उसके परम मित्र बन गए थे। कम्प्यूटर के पास ही उसका एनडीए के दिनों का, उसका नाम लिखा ट्रंक रखा है।

उस छोटे से कमरे को सार्थक नाम दिया गया है–टर्निंग पॉइंट (निर्णायक मोड़)। स्कूल के अधिकांश विद्यार्थी, एमपी के बारे में पढ़ने, जानने के लिए, यहाँ समय बिताते हैं। वर्ष 2015 में जब मैं स्कूल में गया था, तब अपना भाषण शुरु करने से पहले मैंने एमपी का एक फोटो दिखाकर बच्चों से

पूछा कि क्या वे उस फोटो वाले व्यक्ति को जानते थे? उपस्थित सभी बच्चों के हाथ एक साथ उठ गए।

एमपी के इस स्मारक का डिजाइन उसके परम मित्र जी प्रकाश और हरिदास ने प्रायोजित किया और बनाया है। सदर्न कमांड के चीफ़ ऑफ स्टाफ, लेफ्टिनेन्ट जनरल सरथ चन्द ने इसका 12 दिसंबर 2015 को विधिवत उद्घाटन किया। इस उद्घाटन समारोह का आयोजन ओल्ड बॉयज असोसिएशन ने किया था। एमपी की कक्षा के अनेक सहपाठियों के अलावा उसके परिवार के सभी लोग इस उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। इस अवसर पर एमपी के स्कूल के पुराने साथियों ने स्वर्गीय फ्लाईंग ऑफिसर एमपी अनिल कुमार स्मारक उपलब्धि पुरस्कार की स्थापना की भी घोषणा की। इस पुरस्कार के पहले विजेता बने प्रसिद्ध पत्रकार जोसी जोसेफ़।

मैं जब शाला के परिसर में चक्कर लगा रहा था तो मैंने एक परित्यक्त पुराने हारवर्ड हवाई जहाज को देखा जो, कई वर्ष पूर्व स्कूल को दान में मिला था और जिसकी कॉकपिट में बैठकर उसके जंग लगे नियंत्रण साधनों को हिलाने की कोशिश करते हुए एमपी ने उड़ने के सपने देखे थे।

स्कूल से लगभग पंद्रह किलोमीटर दूरी पर, बैकवॉटर्स से घिरे एक दुर्गम कोने में एमपी का गाँव स्थित है।

एमपी का घर मानों उसका स्मारक ही है। जैसे ही आप अंदर दाखिल होते हैं सामने दीवार पर टँगा हुआ वायुसेना का ध्वज आपका स्वागत करता है। उसके नीचे एमपी के जीवन के हर पड़ाव से संबंधित फोटो लगाए गए हैं—शिशु एमपी, शाला को छोडने के बाद का एमपी, शालेय जीवन के ग्रुप फोटो, एनसीसी, एनडीए के फोटो, तेजपुर और पठानकोट के उसके स्क्वॉड्रन की तस्वीरें और फिर व्हीलचेयर पर बैठे हुए एमपी के फोटो, ऐसी कई तस्वीरें हैं। इनमें एक व्यावसायिक चित्रकार द्वारा बनाया गया एमपी का उस समय का चित्र भी है, जब उसके एक सहपाठी मित्र द्वारा उसके जीवन पर एक दस्तावेजी फिल्म—'द फाईट गोज़ ऑन'—बनाई जा रही थी।

अपनी बहन के साथ जिस कमरे का उपयोग वह सोने के लिए करता था उसमें उसके गद्दे और तकिए को संभाल कर रखा गया है। हालाँकि, मृत्यु के पूर्व पच्चीस वर्षों तक एमपी अपने घर नहीं जा पाया था, उसकी माँ ने मुझे उसी थाली में भोजन परोसा जिसमें एमपी खाया करता था। एमपी के द्वारा लिखे गए

प्रत्येक पत्र को संभाल कर रखा गया है—इनमें दुर्घटना के बाद प्रारंभिक वर्षों में मुंह में पेन पकड़कर लिखे हुए भी हैं और बाद में कम्प्यूटर पर टाईप किए हुए भी हैं। उसकी डायरी और नोटबुक के साथ ही उसके प्रकाशित लेख भी रखे हैं। उन्हीं में से एक में एयरफोर्स अकादमी में 21 दिसंबर 1984 को आयोजित पासिंग आउट परेड के लिए आया हुआ एक निमंत्रण पत्र फिसलकर बाहर गिरता है।